

रविप्रभोद्भिन्नशिरोमणिप्रभ (रुणिन्) R. 1, 19. उद्भिन्नसंघम RĀGA-TAR. 6, 124. अनुद्भिन्नपदार्थानि गृह्यवाक्यानि nicht an die Oberfläche gedrungen so v. a. nicht offenkundig GRHJASAMGR. 1, 34. durchdringen, obenauf kommen; act.: उज्जातेन भिन्दुज्जनिवै: RV. 10, 48, 10. कामं स्तुबोदकं भिन्देयम् AV. 9, 2, 2. जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकम् 10, 3, 36. 16, 8, 1. 4, 38, 1. PAÑKAV. Br. 16, 16, 2. 3. अन्योऽन्यशङ्कयोद्भिन्नान् — वशमानयेत् Emporgekommene Kām. Nitis. 17, 45. — Vgl. उद्भिद् fig., उद्भिद् fig.

— प्राद्, partic. प्राद्भिन्न hervorgeschossen, hervorgebrochen: ०रोमोद्भिन्मा Spr. 830. ०कातिद्रव ÇĀK. Ch. 128, 18.

— नि pass. sich öffnen: न्यभिद्येता (v. l. für अनुभि०) कर्णा Buāg. P. 3, 26, 55.

— प्रनि und प्रणि, ०भिनति P. 8, 4, 18, Sch.

— निम् 1) auseinander-spalten, — schlitzten, aufreißen, durchschlagen, durchschneiden, verwunden: आण्डा RV. 1, 104, 8. अण्णू AV. 11, 1, 9. व्रीहीन् Kauṣ. 61. व्रीहोणां नखैर्निर्भिय ÇĀT. Br. 5, 3, 4, 13. नखैर्निर्भिय TBr. 1, 7, 3, 4. तदा देव्यश्मना कुतितं निर्भिभेद MBh. 1, 6790. नारयणोऽहं निर्भिय HARIV. 4601. PRAB. 116, 2. DAÇAK. in BENF. Chr. 201, 1. स्नेहप्रस्रवनिर्भिन्नमुद्रकृत् स्तनांशुकम् (so die v. l.) Vikr. 130. निर्भिद्योपरि कर्णिकारकुमुमान्यशिरते पट्टा: 41. एकैकं योजनं भूमेर्निर्भिन्नतः R. 1, 40, 15 (41, 16 GORR.). (व्याघ्रगणान्) निर्भिभेद च सायकैः MBh. 1, 2834. 4563. 4, 2001. 2097. 7, 4583. HARIV. 6648. 10747. R. 2, 33, 4. 3, 33, 10. 6, 18, 37. RAGH. 9, 64. KATHĀS. 47, 66. वागिनः — तन्तु निर्भिय BHATT. 9, 67. ययाभिद्युष्य संयामे शत्रुं निर्भिभेद रणे HARIV. 12131. न च तत्राप्यनिर्भिन्नः कश्चिदसीत् MBh. 6, 3573. 7, 4584. R. 2, 97, 30. Vikr. 144. KATHĀS. 4, 8. 22, 128. 33, 55. निर्भिय मूर्ध्ना am Kopfe eine Oeffnung durchschlagend Buāg. P. 2, 2, 11. बहुधा निर्भिभेद खम् so v. a. bildete eine Menge Oeffnungen 3, 26, 53. काणकेन — निर्भिभेदास्य लोचने ausstechen MBh. 3, 10328. HARIV. 1068. 1153. Buāg. P. 9, 3, 7. हृदयग्रन्थिम् lösen 5, 23, 8. pass. sich spalten, sich öffnen: आण्डं निर्भिद्यत KĀND. Up. 3, 19, 1. मुखं निर्भिद्यत यवाण्डम् Ait. Up. 1, 4. Buāg. P. 2, 10, 17. नासिके निर्भिद्येताम् 20. निर्भिद्यत वै गुदम् 3, 26, 56. SUCR. 4, 271, 19. act. in derselben Bed.: निर्भिभेद विराजस्त्वक् Buāg. P. 3, 26, 56. — 2) trennen, scheiden: मुखतस्तालु निर्भिन्नम् trennte sich Buāg. P. 2, 10, 18. अनिर्भिन्न (ब्रह्मन् und सुजनप्रेमन्) nicht geschieden und ununterbrochen Spr. 3473. — 3) निर्भिन्न uneinig: अन्योऽन्येन निर्भिन्नम् (त्रान्) Kām. Nitis. 13, 81. — 4) verrathen: निर्भिन्नप्रायं रहस्यम् DAÇAK. in BENF. Chr. 193, 8. — 5) hinter Etwas kommen: कात्तकापचारं निर्भिय DAÇAK. in BENF. Chr. 200, 20. — Vgl. निर्भिद् fig.

— विनिम् auseinander-spalten, aufschlitzen, durchschneiden: तस्य पार्श्वं विनिर्भिद्य MBh. 3, 8551. 14, 2238. HARIV. 2534. पुरुषो ऽण्डं विनिर्भिद्य Buāg. P. 2, 10, 10. इयुणा हृदि । विनिर्भिन्नम् DAÇ. 2, 15. MBh. 6, 2524. HARIV. 10748. pass. sich spalten, sich öffnen: कर्णावस्य विनिर्भिन्नौ Buāg. P. 3, 6, 17.

— परा durchbohren, verwunden: शैश्चैनम् — पराभिन्तु MBh. 7, 9379. 8, 481.

— परि 1) zerspalten, zerschlagen: दाक्षिणि परिभिन्नानि वनैरुत्पन्नो विभिः R. 2, 34, 7. अशमभिः परिभिन्नाङ्गाः 4, 18, 2. तण्डुलाः zersprungen, zerbröckelt ÇĀT. Br. 5, 3, 2, 7. durchbrechen (uneig.): धर्मस्य — संस्था

च तैरपि (यनैरपि ed. Bomb.) कृता कालेन परिभिद्यते MBh. 13, 7543. — 2) verändern, entstellen: परिभिन्नस्वर् MBh. 12, 5362. — Vgl. परिभेदक.

— प्र 1) spalten, zerspalten, schlitzten: प्र वृत्तणा अभिन्तुर्वर्तानाम् RV. 1, 32, 1. दृच्छा चित्स प्र भेदति 5, 86, 1. मूधः VS. 3, 37. यथा वै लाङ्गलेनोर्वरां प्रभिन्दति wie man mit dem Pfluge den Acker aufreißt TS. 6, 6, 4. ÇĀT. Br. 3, 4, 4, 6. 8. ममोरुमेत्य प्रभिभेद कोटः MBh. 8, 1966. शैः प्रभिन्दन्निव पाण्डवेयौ 4299. HARIV. 16286. प्रभिन्नवैदूर्पनिभेस्तृणाङ्कुरैः R. 2, 5. प्रभिन्नाकारान् zerbrochen R. 5, 14, 51. वायुप्रभिन्नामिव धूमरेखाम् durchbrochen, unterbrochen 11, 24. durchstechen, öffnen: प्र ते भिन्नाभि मेहेन वत्रं वेशत्या इव AV. 1, 3, 7. प्रभिन्नामिव विस्तीर्णा वायोमपहृतोत्पलाम् R. GORR. 2, 123, 15. pass. zerspringen, zerbröckeln: दत्ताः प्रभिद्यते ÇĀT. Br. 11, 4, 4, 5. 12. aufgehen, sich lösen: प्रभिन्नकमलोदर aufgegangen, aufgeblüht SĀH. D. 10. 8. यदा सर्वं प्रभिद्यते हृदयस्येह ग्रन्थयः KĀTHOP. 6, 15. (ग्रन्थयः) प्रभिन्नाः स्रवन्ति gehen auf und fließen SUCR. 1, 287, 15. प्रभिन्नं प्रसृतं च यत् (शोणितम्) durch Oeffnungen hervordringend 233, 18. प्रभिन्नविर् so v. a. aperiens, evacans 199, 6. प्रभिन्नप्रसृताङ्ग (so ist zu lesen) dessen Glieder nassen und fließen 120, 4. प्रभिन्नकर्ट von einem Elephanten, dessen Schläfen sich geöffnet haben und fließen (während der Brunstzeit) MBh. 1, 7671. 12, 4280. R. GORR. 2, 28, 8. 6, 18, 3. प्रभिन्नकरामुख MBh. 3, 441. 8704. 4, 757. 1030. 14, 2183. प्रभिन्न allein von einem brünstigen Elephanten gesagt AK. 2, 8, 2, 4. H. 1220. HALĀJ. 2, 65. DRAUP. 3, 5. MBh. 1, 7074. 8013. 4, 585. 13, 641. 4848. R. GORR. 2, 20, 4. 6, 4, 10. KUMĀRAS. 3, 80. Spr. 673. — 2) pass. sich spalten so v. a. sich theilen: जङ्गमानां च सर्वेषां शरीरे पञ्च धातवः । प्रत्येकशः प्रभिद्यते यैः शरीरं विवेष्टते ॥ MBh. 12, 6839. — 3) प्रभिन्न entstellt, verändert, verstimmt: न त्वं प्रभिन्नं (= पराजितं Schol.) जानामि MBh. 16, 259. — 4) प्रभिन्नाञ्जन so v. a. भिन्नाञ्जन mit Oel angemachte Augensalbe R. 2, 2. PAÑKAV. 4, 6, 8. — Vgl. प्रभिद्, प्रभेद fig.

— उपप्र zerbröckeln, in Brocken hinstreuen: ताम्यः सूक्ष्मं प्राभिन्तु TBr. 1, 1, 3, 5. 2, 4, 3.

— संप्र, partic. ०भिन्न von einem Elephanten, dessen Stirn sich geöffnet hat und fließt (in der Brunstzeit) MBh. 7, 1083.

— प्रति 1) durchbohren: कस्याय कायं प्रतिभिद्य घोरा महौ प्रवेद्यति शिताः शरण्याः MBh. 3, 15681. — 2) verrathen: अप्रतिभिद्य रहस्यम् DAÇAK. in BENF. Chr. 199, 21. — 3) seinen Unwillen gegen Jmd (acc.) an den Tag legen RAGH. 19, 22. ÇĀT. 9, 58. 10, 35. — 4) प्रतिभिन्न wohl in unmittelbarer Berührung stehend —, eng verbunden mit (instr.): हृत्वा-प्रबलैः प्रतिभिन्नशोभम् 'cujus splendor divisus est Dūrvaee culmānibus St.' KUMĀRAS. 7, 7. चन्द्रेण नित्यं प्रतिभिन्नमौलेः — ह्रस्व (cujus crista distincta est luna St.) 35. — Vgl. प्रतिभेद fig.

— वि 1) durchbohren, zerspalten, zerbrechen, eröffnen RV. 1, 33, 12. पर्वतम् 83, 10. अद्रिम् 8, 49, 16. 6, 63, 5. 10, 28, 9. पुरा विभिन्दन्वरादि दासीः 1, 103, 3. 8, 33, 7. 10, 67, 5. शिरः 8, 63, 2. AV. 10, 128, 13. मूर्धानम् RV. 10, 67, 12. 68, 4. 138, 5. 6. AV. 1, 11, 5. 4, 19, 5. तस्य वर्म विभिन्नाशु च वाणः MBh. 3, 709. विषाणैश्चावनं गत्वा व्यभिन्दन्वयिना ब्रह्मन् 7, 1388. 4694. विभिद्येदं रसातलम् R. GORR. 1, 42, 10. Buāg. P. 3, 13, 31. VARĀH. BRH. S. 44, 21. KATHĀS. 2, 10. निशितशैर्विभिद्यमानवर्चि Buāg. P. 1, 9, 34. शैरिति विभिन्नाङ्गः R. 6, 18, 44. RAGH. 16, 16. VARĀH. BRH. S. 43, 13. MĀRK.